पशु आहार निर्यातः भारत में चुनौतियाँ और अवसर

कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 172–174

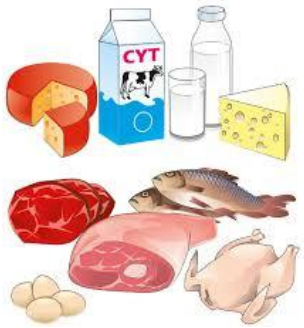


# पशु आहार निर्यातः भारत में चुनौतियाँ और अवसर

**राजकुमार सोनी[1], राजेंद्र कुमार सोनी, मीठा लाल मीना[3] एवं वीरेन्द्र सिंह[4]**

एम.एससी.[1,2] और रिसर्च स्कॉलर[3,4]

पशुपालन और डेयरी विज्ञान विभाग[1,2,3] और सस्य विज्ञान[4]

राजा बलवंत सिंह महाविद्यालय, बिचपुरी, आगरा–283105 (उ.प्र.), भारत।

**Email Id:** 25rajkumar1999@gmail-com

## परिचय

भारत सदैव कृषि आधारित अर्थव्यवस्था रहा है। औद्योगिक, विनिर्माण और सेवा क्षेत्र की तीव्र वृद्धि के बावजूद, कृषि और संबद्ध क्षेत्र अभी भी 52% से अधिक कामकाजी आबादी को रोजगार प्रदान करते हैं। यह देश के भौगोलिक क्षेत्र के 43% को कवर करते हुए देश की जीडीपी में लगभग 18.1% का योगदान देता है। इस क्षेत्र के प्रमुख हिस्से में स्वाभाविक रूप से अंतरसंबंधित पशुधन उत्पादन शामिल है, जिसमें भारत जैसे गतिशील देश में विकास की बहुत बड़ी गुंजाइश है, जो अनुकूल जलवायु परिस्थितियों और भौगोलिक स्थिति से समृद्ध है। पशुधन उत्पादन में पशु खाद्य उत्पादों यानी डेयरी और मांस का प्रावधान शामिल है और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में इसका महत्वपूर्ण महत्व है। इसके अलावा यह ग्रामीण क्षेत्र में गरीब भूमिहीन किसानों के लिए आय और रोजगार पैदा करके देश की अर्थव्यवस्था के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## वैश्वीकरण और विश्व व्यापार संगठन

संपूर्ण कृषि अर्थव्यवस्था में पशु उत्पादन सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी क्षेत्र है। घरेलू और विदेशी बाजारों के लिए पशु उत्पादों के उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं। इसलिए, पशुधन संसाधनों की पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए एक किसान अनुकूल और निर्यात उन्मुख स्पष्ट नीति की आवश्यकता है। वैश्वीकरण का लाभ प्राप्त करने के लिए, आयातक देशों के कड़े मानकों को पूरा करने के लिए आधुनिक प्रसंस्करण मशीनरी और एचएसीसीपी और जीएमपी जैसी गुणवत्ता नियंत्रण तकनीकों को नियोजित करके मूल्यवर्धित पारंपरिक उत्पादों के उत्पादन और प्रसंस्करण में सुधार करना होगा। सनराइज मीट उद्योग के लाभ के लिए अनुसंधान एवं विकास संस्थानों, छोटी और बड़ी कंपनियों के बीच सहयोगात्मक संबंध वांछनीय होंगे।

## मांस उत्पादन

मांस उत्पादन उद्योग भारतीय कृषि व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक शोध के अनुसार, भारत में मांस का उत्पादन सालाना 6.3 मिलियन टन होने का अनुमान है और उत्पादन मात्रा के मामले में यह दुनिया में 5वें स्थान पर है। विश्व के कुल मांस उत्पादन का 3% उत्पादन भारत में होता है। इस देश में पशुधन की दुनिया की सबसे बड़ी आबादी लगभग 515 मिलियन है। मांस मानव जाति के लिए पशु मूल प्रोटीन का प्रमुख स्रोत है। इसके अलावा मांस विकास और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों का भी योगदान देता है। पशु उत्पादों की प्रति व्यक्ति खपत में वृद्धि की दर विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में अधिक पाई गई।.

## पशुधन उत्पादन

पशुधन उत्पादन भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आय, रोजगार और विदेशी मुद्रा अर्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 2012 की अंतिम पशुधन जनगणना के अनुसार, भारत

में कुल 512.05 मिलियन पशुधन आबादी है जिसमें 190 मिलियन मवेशी (विश्व मवेशी आबादी का 13%) और 108.7 मिलियन भैंस (विश्व भैंस आबादी का 56%), सूअर, भेड़, बकरी और अन्य जानवर शामिल हैं। 2007 से 2012 तक कुल पशुधन आबादी में 3.3% की गिरावट आई है। यह भारत सरकार द्वारा उठाए गए कई पहलों के बावजूद है, जैसे पशु रोग पर नियंत्रण के लिए टीकाकरण, वैज्ञानिक प्रबंधन, आनुवंशिक संसाधनों का उन्नयन, पौष्टिक आहार की उपलब्धता में सुधार और विभिन्न सब्सिडी के माध्यम से चारा और प्रसंस्करण, विपणन और लाभप्रदता का समर्थन करना। पशुधन आबादी में यह गिरावट संभवतः युवा आबादी की कामकाजी क्षेत्र की ओर बढ़ती रुचि के कारण है।

पशुधन उत्पादन भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आय, रोजगार और विदेशी मुद्रा अर्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 2012 की अंतिम पशुधन जनगणना के अनुसार, भारत में कुल 512.05 मिलियन पशुधन आबादी है जिसमें 190 मिलियन मवेशी (विश्व मवेशी आबादी का 13%) और 108.7 मिलियन भैंस (विश्व भैंस आबादी का 56%), सूअर, भेड़, बकरी और अन्य जानवर शामिल हैं। 2007 से 2012 तक कुल पशुधन आबादी में 3. 3% की गिरावट आई है। यह भारत सरकार द्वारा उठाए गए कई पहलों के बावजूद है, जैसे पशु रोग पर नियंत्रण के लिए टीकाकरण, वैज्ञानिक प्रबंधन, आनुवंशिक संसाधनों का उन्नयन, पौष्टिक आहार की उपलब्धता में सुधार और विभिन्न सब्सिडी के माध्यम से चारा और प्रसंस्करण, विपणन और लाभप्रदता का समर्थन करना। पशुधन आबादी में यह गिरावट संभवतः युवा आबादी की कामकाजी क्षेत्र की ओर बढ़ती रुचि के कारण है।

## दूध उत्पादन

गोजातीय जनसंख्या में गिरावट के बावजूद, भारत दूध और दूध उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता बना हुआ है। यह संभवतः पशुधन की बढ़ती उत्पादकता और अधिक उपज देने वाली किस्मों जैसे संकर नस्ल और विदेशी गोजातीय किस्म के चयन के कारण है जो देशी किस्म की तुलना में अधिक दूध का उत्पादन करती हैं। दूध की उत्पादकता 2006–07 में 102.6 मिलियन टन से बढ़कर 2017–18 में 176.3 मिलियन टन हो गई है, जो 6.62% की वार्षिक वृद्धि दर दर्शाती है। यह उत्पादन मात्रा व्यापक मार्जिन के साथ अगले उच्चतम उत्पादकों, अमेरिका (89 मिलियन टन) और चीन (43 मिलियन टन) से अधिक है। वर्तमान में वर्ष 2018–19 के दौरान भारतीय डेयरी क्षेत्र से निर्यात केवल 345.71 मिलियन अमरीकी डालर का है, जो इसके उत्पादन मात्रा की तुलना में नगण्य है। कम निर्यात मूल्य और मात्रा निम्न कारणों से है:

1. उच्च घरेलू खपत, भारत डेयरी उत्पाद का सबसे बड़ा उपभोक्ता है।
2. 2–3 जानवरों और सीमित उत्पादकता वाले छोटे खिलाड़ी का प्रभुत्व। 80% दूध 5 से कम पशु रखने वाले किसानों से आता है।
3. उत्पादों की खराब गुणवत्ता जो विकसित देश के मानकों को पूरा करने में विफल रहती है।
4. डेयरी क्षेत्र में भारत के प्रमुख निर्यात में दूध पाउडर और दूध वसा शामिल हैं, जो निर्यात मूल्य का 90% से अधिक है।
5. इसके अतिरिक्त, डेयरी खाद्य पदार्थों के क्षेत्र में सरकारी सब्सिडी की उच्च दरें भी निर्यात मूल्य को कम करती हैं।

## मांस उत्पादन

भारत प्रमुख रूप से पालतू जानवरों से जुड़ी पारंपरिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं द्वारा शासित है। इस प्रकार भोजन पशुओं की उत्पादक आयु पार करने के बाद भी, बहुत से लोग अपने जानवरों को बूचड़खानों को नहीं बेचते हैं। जिससे भारत दुनिया में 5वें सबसे बड़े मांस निर्यातक देश और भैंस के मांस (कैराबीफ) के पहले सबसे बड़े निर्यातक देश में आ गया है। यह ध्यान देने योग्य है कि भारत गाय (गोमांस) के वध की अनुमति नहीं देता है फिर भी मांस के वैश्विक निर्यातक में अग्रणी है। वर्तमान में भारत लगभग 3608.70 मिलियन अमरीकी डालर के राजस्व

के साथ 64 से अधिक देशों को मांस निर्यात कर रहा है और भारतीय खेपों से खाद्य जनित संक्रमण का एक भी प्रकोप सामने नहीं आया है। भारतीय मांस निर्यात के प्रमुख गंतव्य वियतनाम (1,711.70 मिलियन अमरीकी डालर), मलेशिया (369.56 मिलियन अमरीकी डालर), इंडोनेशिया (324.45 मिलियन अमरीकी डालर), इराक, म्यांमार, फिलीपींस, मिस्र और सऊदी अरब रहे हैं।

**प्रशंसनीय कारण निम्नलिखित लाभों के कारण हैं:**

1. भारत में पशुधन को हरे चरागाह या कृषि अवशेषों पर पाला जाता है।
2. वृद्धि हार्मोन का न्यूनतम उपयोग।
3. ओआईई द्वारा प्रमाणित भारतीय पशुधन पागल गाय रोग, रिंडरपेस्ट रोग और सीबीपीपी से मुक्त है।
4. भारतीय मांस विकिरण और जीएमओ से मुक्त है।
5. मांस का वध हलाल नियमों के अनुसार किया जाता है जो खाड़ी और अन्य मुस्लिम देशों में निर्यात के लिए उपयुक्त है।

## मांस क्षेत्र के विकास के पक्षधर कारक

1. **भारतीय मांस का दुबलापन:** इसमें वसा कम होती है और वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय रुझान कम वसा वाले मांस के लिए अनुकूल है।
2. हरा चारा खिलाना, राशन में पशु प्रोटीन की अनुपस्थिति (शव भोजन, मांस और हड्डी का भोजन) भारतीय मांस उद्योग के लिए अनुकूल कारक हैं।
3. चारे में हार्मोन, एंटीबायोटिक्स और ग्रोथ प्रमोटर्स की अनुपस्थिति के कारण भारतीय मांस न केवल दुबला बल्कि स्वच्छ और जैविक भी माना जाता है।
4. भारत में बोवाइन स्पॉन्गिफॉर्म एन्सेफेलोपैथी (बीएसई) की कोई घटना नहीं है।

## चुनौतियां

- **कृषि पशुओं की उत्पादकता:**

यह बड़ी चुनौतियों में से एक है. भारतीय मवेशियों की औसत वार्षिक दूध उपज 1172 किलोग्राम है जो वैश्विक औसत का लगभग 50 प्रतिशत ही है।

- **पशुओं के रोग और संक्रमण:**

खुरपका और मुंहपका रोग, ब्लैक क्वार्टर संक्रमण और इन्फ्लूएंजा जैसे संक्रमणों का बार–बार फैलने से पशुधन के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है और उत्पादकता कम हो जाती है।

- **चारा और चारे की समस्याएँ:**

पशुधन अपनी ऊर्जा आवश्यकता का एक बड़ा हिस्सा कृषि उप–उत्पादों और अवशेषों से प्राप्त करते हैं। फसल क्षेत्र का बमुश्किल 5% हिस्सा चारा उगाने के लिए उपयोग किया जाता है। भारत में सूखे चारे में 11%, हरे चारे में 35% और सांद्रित चारे में 28% की कमी है। सामान्य चरागाह भूमि भी मात्रात्मक और गुणात्मक रूप से खराब हो रही है।

- **वध सुविधाएं बहुत अपर्याप्त हैं:**

कुल मांस उत्पादन का लगभग आधा हिस्सा गैर–पंजीकृत, अस्थायी बूचड़खानों से आता है। पशुधन उत्पादों की विपणन और लेनदेन लागत बिक्री मूल्य का 15–20% अधिक है।

## निष्कर्ष

डेयरी और मांस उद्योग दोनों ने एक लंबा सफर तय किया है और काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। हालाँकि, सुधार और उच्च वृद्धि की काफी गुंजाइश है। भंडारण और परिवहन के लिए उन्नत कोल्ड चेन सुविधा के विकास के लिए एक अभिन्न दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

डेयरी और मांस क्षेत्र में भारतीय ब्रांडों और स्थानीय हितधारकों को बढ़ावा देने के लिए नीतियां बनाने की जरूरत है ताकि लगातार बढ़ते अंतरराष्ट्रीय बाजार पर कब्जा किया जा सके। विशाल पशुधन संसाधन के बावजूद भारत अपनी सांस्कृतिक धारणा और धार्मिक मान्यताओं के कारण कभी भी मांस उद्योग में अपनी पूरी क्षमता का एहसास नहीं कर सका।